राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

नित्यं रामायणं येन, पठ्यते पाठ्यते तथा ।
तस्मिन्नोत्पद्यते कश्चिद्, दुराचारः कदाचन ॥२५४॥

जो नित्य रामायण पढ़ता है तथा पढ़ाता है, उसमें कभी कोई दुराचार पैदा नहीं होता ।

Misbehaviour never arises in the one who always reads and teaches Ramayana.

नित्यं व्यायाम-कर्त्ता यो, हिताहारस्य सेवकः ।
शरीरे मनसि स्वस्थे, चिरं जीवति किं न सः ? ॥२५५॥

जो नित्य व्यायाम करने वाला और हित आहार का सेवक करने वाला है, क्या शरीर और मन में स्वस्थ रहता हुआ वह चिरं जीवी नहीं होता है ?

Doesn't the one live long who's body and mind are healthy because of constant exercise and a healthy diet?

निन्द्यं कर्म न कर्तव्यं, प्रात्साह्यश्च कदापि न ।
दण्डनीयस्तथा कर्त्ता, यथाऽन्योऽन्वेतु तं नहि ॥२५६॥

निन्दनीय कर्म नहीं करना चाहिये और निन्दनीय कर्म करने के लिये उसे कभी प्रोत्साहित भी नहीं करना चाहिये। उस प्रकार के निन्दनीय कर्म करने वाले को तो वैसा दण्ड दिया जाय जिसको देख कर कोई दूसरा उसका अनुसरण नहीं करे ।

Condemnable deeds should neither be done nor encouraged. The doer should be punished in such a way that nobody else would repeat them.

निराशा नैव कर्त्तव्या, परेशोऽस्ति सहायकः ।
कर्म कार्यं तमालम्ब्य, साफल्यँ लप्स्यते ध्रुवम् ॥२५७॥

निराशा नहीं करनी चाहिये । परमेश्वर सहायक है । उस परमेश्वर का सहारा लेकर कर्म करना चाहिये । निश्चित रूप से सफलता प्राप्त की जायेगी ।

One should not despair. God is the helper. Work should be done with the help of God, and success will surely follow.

निर्जीवेनापि देहेन, क्षुच्शान्तिर्यदि कस्यचित् ।
तर्हि तदीय-सार्थक्यं, ततोऽन्यन्नास्ति किञ्चन ॥२५८॥

यदि निर्जीव भी शरीर से किसी की क्षुधा-शान्ति हो जाती है, तो उससे अधिक अन्य कोई उस शरीर की सार्थकता नहीं है ।

If one's hunger is satisfied with the lifeless body, then there is no better use of that body.

निर्धना मत - दातारः, कार्याकार्ये न जानते ।
धनलोभादकार्यं ते, कृत्वा क्रीणन्त्यमङ्गलम् ॥२५९॥

निर्धन मतदाता कर्त्तव्याकर्त्तव्य को नहीं जानते । धन के लोभ से तो वे अकर्त्तव्य करके अमङ्गल खरीद लेते हैं ।

A poor voter does not differentiate between good and bad deeds. Due to greed for money he is unfortunately bought to do the bad deeds.

निर्माता चेद् असन्तुष्टो, विध्वंसकः स जायते ।
सुयशो लभते नूनम्, असन्तोष - निवारकः ॥२६०॥

यदि निर्माण-कर्त्ता को असन्तुष्ट कर दिया जाता है तो वह विध्वंसकारी बन बैठता है । असन्तोष का निवारण करने वाला निश्चित रूप से सुख प्राप्त करता है ।

The builder becomes subversive if made unhappy. Surely, happy is the one who prevents this grudge.